17 दिसम्बर 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

अन्तर से शान्त रहनेवालों की शान्ति को भंग करने की शक्ति तो किसी में है ही नहीं। सारा लोक भी उलट जाए तो भी उनकी शांति में भंग नहीं पड़ सकता।
ह्न सत्य की खोज, पृष्ठ-176

वर्ष : 32, अंक : 18 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
दिसम्बर (द्वितीय), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

इन्दौर में हीरक जयन्ती पर पाँच दिवसीय कार्यक्रम

इन्दौर (म.प्र.) : जैनदर्शन के शिखरपुरुष डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की हीरक जयन्ती 25 से 29 नवम्बर तक पंच दिवसीय अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित आयोजित की गई। इस प्रसंग पर डॉ. भारिल्ल से संबंधित विद्वत् संगोष्ठी एवं पत्रकार गोष्ठी के अतिरिक्त दिनांक 29 नवम्बर को रविन्द्र नाट्यगृह के खचाखच भरे हुये विशाल हॉल में दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैन समाज की लगभग 70 संस्थाओं द्वारा बृहद् स्तर पर डॉ. भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह आयोजित किया गया।

दिनांक 27 नवम्बर को विभिन्न महिला संगठनों की ओर से होटल अप्सरा में '**डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : व्यक्तित्व एवं कृतित्व**' विषय पर श्री कैलाशचन्दजी वैद की अध्यक्षता एवं श्री अशोकजी बड़जात्या के मुख्य आतिथ्य में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। वक्ताओं में श्रीमती रेखा पाण्ड्या, श्रीमती उषा कासलीवाल, उषा बण्डी, सरिता जैन, दिलखुश रांवका तथा स्नेहलता गंगवाल ने अपने-अपने विचार व्यक्त किये। विशेष वक्ता के रूप में वीर निकलंक के सम्पादक श्री रमेश कासलीवाल ने विचार व्यक्त किए। पूर्व में 25 व 26 नवम्बर को क्रमशः पत्रकार गोष्ठी एवं जैन सोश्यल ग्रुप के कार्यकर्ताओं की सभा हुयी। पत्रकार गोष्ठी में डॉ. भारिल्ल के जीवन पर आधारित पुस्तिका 'शिखरपुरुष' का विमोचन किया गया।

डॉ. भारिल्ल का सम्मान करते हुये श्री अशोक बड़जात्या, पद्मश्री बाबूलाल पाटोदी, श्री हंसमुख गांधी, श्री मनोहरलाल काला, पं. गौरव शास्त्री, पं. सौरभ शास्त्री व अन्य

29 नवम्बर को '**डॉ. भारिल्ल का सामाजिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक, शैक्षणिक तथा अन्य क्षेत्रों में अवदान**' विषय पर विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन हुआ। संगोष्ठी में पण्डित सतीशजी कासलीवाल, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, पण्डित रमेशजी बाँझल, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल, पण्डित रमेशजी कासलीवाल, श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री अशोकजी बिडीवाले, पण्डित गौरवजी शास्त्री, पण्डित सुशीलजी राधौगढ़, पण्डित सौरभजी शास्त्री आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

29 नवम्बर को समग्र जैन समाज की ओर से रवीन्द्र नाट्य गृह के विशाल हॉल में डॉ. भारिल्लजी का 70 से अधिक दिगम्बर व श्वेताम्बर संस्थाओं द्वारा भावभीना अभिनन्दन किया गया।

समारोह की अध्यक्षता श्री अशोककुमारजी बड़जात्या ने की। समारोह के मुख्य अतिथि अशोक जैन 'अरिहंत' तथा विशिष्ट अतिथि प्रमोद जैन थे।

इस अवसर पर बोलते हुए **पद्मश्री बाबूलालजी पाटोदी** ने कहा ह्न

'डॉ. भारिल्लजी ने जो कार्य जैन समाज के लिए किया है; बड़े-बड़े सन्तों ने भी नहीं किया। पंथ व्यामोह से ऊपर उठकर, दिगम्बर-श्वेताम्बर के मतभेद भुलाकर आपने ज्ञान दान का जो कार्य किया है, वह अनुकरणीय है। यह भारिल्लजी का नहीं, समग्र जैन समाज का अभिनन्दन है।'

अन्य वक्ताओं में श्री कैलाशचन्दजी वैद (अध्यक्ष,दि. जैन समाज इन्दौर), श्री मनोहरलालजी काला (अध्यक्ष,मुमुक्षु मण्डल इन्दौर), श्री गजराज सिंह झामड (महामंत्री, श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज), श्री सोहनलाल जी पारिख(महासचिव, अ.भा.जैन श्वेताम्बर महासंघ), श्री यशवंतजी जैन (महामंत्री,अ.भा. जैन श्वेताम्बर महासंघ), श्री राजकुमारजी जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष-श्वेताम्बर जैन श्योशल ग्रुप फैडरेशन), श्री विमलजी अजमेरा (राष्ट्रीय अध्यक्ष दि.जैन श्योशल ग्रुप फैडरेशन), श्री रमेशजी कासलीवाल(सम्पादक-वीर निकलंक), श्री राजेन्द्रजी जैन, श्री अर्पितजी बडजात्या आदि प्रमुख थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ वयोवृद्ध विद्वान पण्डित रतनलालजी शास्त्री के मंगलाचरण से हुआ। सम्मान के प्रत्युत्तर में **डॉ. भारिल्लजी** ने कहा ह्न

'यह सम्मान व्यक्ति का नहीं; अपितु ज्ञान की आराधना का है। गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की चिता के सामने मैंने संकल्प लिया था कि आपके द्वारा दिये गये भगवान महावीर के तत्त्वज्ञान को मैं अन्तिम समय तक जन-जन में पहुँचाता रहूँगा।'

समारोह के अध्यक्ष श्री अशोकजी बडजात्या ने कहा कि कुछ सीखना है तो डॉ. भारिल्ल के जीवन से सीखें। अच्छा गुरु वही है, जो स्वयं सीखने के साथ शिष्यों को समझाए, प्रेरणा देकर ज्ञान का मार्ग प्रशस्त करे। **(शेष पृष्ठ 7 पर ...)**

हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

डॉ. भारिल्ल को रजत श्रुतस्कन्ध भेंट

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 29 नवम्बर को सायंकाल स्थानीय क्षीरसागर जिनमंदिर के प्रवचन हॉल में डॉ. भारिल्ल के समयसार गाथा 73 पर हुये मार्मिक प्रवचन के उपरांत सत्कार सभा का आयोजन जैन युवा फैडरेशन, कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान, सीमंधर-महावीर मंदिर ट्रस्ट एवं सम्यक् तरंग महिला मण्डल के संयुक्त तत्त्वावधान में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ पण्डित नागेश जैन के मङ्गलाचरण से हुआ, पश्चात् डॉ. भरत जैन ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। सर्वप्रथम पण्डित **प्रदीप झांझरी** ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्रकाश डालते हुये कहा कि डॉ. भारिल्ल की कृति क्रमबद्धपर्याय जब गुरुदेवश्री ने पढी तो उनके मुंह से निकला '**पण्डित हुकमचंद मगजवाला मानस छै**' यह बात मैने अपने कानों से सुनी है। दादा विमल झांझरी ने भी डॉ. साहब के बारे में अनेक संस्मरण सुनाये।

विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे **पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. सत्यनारायण जटिया** ने कहा कि मैं तो समाचार पत्रों में पढकर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन सुनने आया था; पर आपने मुझे डॉ. भारिल्ल का सत्कार करने का अवसर प्रदानकर यह पुण्य कार्य मुझसे करवाया है।

मुख्य अतिथि के रूप में पधारे **श्री पवनजी जैन आई.जी. उज्जैन रेंज** ने भी डॉ. भारिल्ल द्वारा किये जा रहे तत्त्वप्रचार के कार्य की सराहना करते हुये उनके यशस्वी जीवन की कामना की।

महर्षि पाणिनी संस्कृत विश्वविद्यालय के कुलपति श्री मोहन गुप्त ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में जैनधर्म के अनेकांत के सिद्धांत को अद्वितीय निरूपित करते हुये डॉ. भारिल्ल के साहित्य साधना की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

इस अवसर पर दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैन समाज की शीर्षस्थ संस्थाओं द्वारा डॉ. भारिल्ल का भावभीना अभिनन्दन किया गया और उन्हें स्मृति स्वरूप रजत श्रुतस्कन्ध भेंट किया गया।

अ.भा.जैन पत्र संपादक संघ के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अखिलजी बंसल का भी युवा फैडरेशन द्वारा स्वागत किया गया। सभा का संचालन श्री जम्बू जैन '**धवल**' ने किया।

समारोह में श्री केवलचंदजी जैन, श्री अशोकजी जैन, श्री राकेशजी जैन, श्री प्रवीणजी रावत, श्री अरहंतप्रकाशजी झांझरी, पण्डित सुरेन्द्रजी जैन, श्री विपिनजी पाटनी, चन्द्रप्रभा मिण्डा, पुष्पलता बहन एवं सन्तोषजी छाबड़ा आदि कही गरिमामय उपस्थिति रही।

हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

परवार समाज द्वारा अभिनन्दन

उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 29 नवम्बर को दोपहर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह दि.जैन परवार समाज द्वारा मनाया गया। इस समारोह में डॉ. भारिल्ल को शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता परवार समाज के अध्यक्ष श्री केवलचंदजी जैन कुँभराजवालों ने की तथा प्रमुख अतिथि श्री अशोकजी बड़जात्या इन्दौर थे। बड़जात्याजी ने डॉ. भारिल्ल के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुये उन्हें अध्यात्म जगत का शिखर पुरुष निरूपित किया। डॉ. भारिल्ल ने अपने उद्बोधन द्वारा उपस्थित जनों को धर्म मार्ग प्रशस्त करते हुये प्रदत्त सम्मान के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

मंचासीन अतिथियों में श्री बालमुकुन्दजी एडवोकेट, श्री सुभाषचंदजी सिंघई एवं श्री जीवनलालजी जैन सम्मिलित थे।

कार्यक्रम का सफल संचालन परवार समाज के मंत्री श्री अशोकजी जैन सर ने किया, राकेश जैन कुंभराज ने अभिनन्दन-पत्र का वाचन किया एवं श्री अशोकजी जैन बांझल ने आभार प्रदर्शन किया। **– केवलचंद जैन**

तारण-तरण समाज द्वारा अभिनन्दन

होशंगाबाद (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 22 से 24 नवम्बर तक तारण-तरण दि.जैन समाज द्वारा आगम के प्रकाण्ड विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयन्ती समारोह मनाया गया।

इस अवसर पर श्री प्रभात गिल्ला (अध्यक्ष-तारण-तरण दि.जैन समाज होशंगाबाद) द्वारा डॉ. भारिल्ल को शॉल, श्रीफल एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया, इनके अतिरिक्त डॉ. राजेन्द्र जैन (दि.जैन समाज होशंगाबाद), श्रीमती विमला समैया (तारण-तरण शिक्षा समिति), श्री सुनील समैया (अध्यक्ष-व्यापारी मंडल होशंगाबाद) एवं श्रीमती नीरजा फौजदार (अध्यक्षा-तारण-तरण महिला मण्डल) आदि अनेक लोगों ने डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री आनंदमोहनजी मस्ते ने की। मुख्य-अतिथि श्री सुभाषजी दिगम्बर थे।

अभिनन्दन-पत्र का वांचन तारण-तरण दि. जैन समाज के सचिव डॉ. प्रशांत जैन ने किया। यहाँ पहले से ही उपस्थित पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा का सम्मान श्री दीपचंदजी समैया ने शॉल व श्रीफल भेंटकर किया।

श्री तारण जयन्ती के उपलक्ष्य में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का तारणस्वामी द्वारा विरचित ज्ञान समुच्चयसार ग्रंथ पर सारगर्भित प्रवचन हुआ।

और अब कन्नड़ में भी ...

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रकाशित होनेवाली अत्यंत लोकप्रिय आध्यात्मिक पत्रिका वीतराग-विज्ञान (मासिक) हिन्दी व मराठी में मिलाकर प्रतिमाह लगभग 9 हजार प्रकाशित होती है।

कन्नड़ भाषी अध्यात्मप्रेमी भाई-बहनों की अध्यात्म पिपासा शांत करने के लिये अब इसे कन्नड़ में भी प्रकाशित किया जा रहा है, जिसके प्रथम प्रवेशांक का विमोचन भंडारी वसदि, श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में दिनांक 25 दिसम्बर को संपन्न होने जा रहा है। **– प्रबंध सम्पादक**

पत्रकार सम्मेलन कोलकाता में ...

अ.भा. जैन पत्र सम्पादक संघ के तत्त्वावधान में दो दिवसीय पत्रकार सम्मेलन कोलकाता (प.बंगाल) में 23 एवं 24 जनवरी, 2010 को सम्पन्न होने जा रहा है। सम्मेलन की अध्यक्षता संघ के अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव करेंगे। विस्तृत जानकारी संघ के कार्याध्यक्ष डॉ.चिरंजीलाल बगड़ा (संयोजक पत्रकार सम्मेलन) से मो.नं.093331030556 पर प्राप्त की जा सकती है। आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था है। इस अवसर पर कार्यकारिणी की मीटिंग भी आयोजित है। **– अखिल बंसल, महामंत्री**

सम्पादकीय – **42**

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

जैनधर्म के श्रद्धावान यह तो भलीभाँति जानते ही हैं कि मुनिसंघ चातुर्मास स्थापना के लिए न तो किसी का आमंत्रण स्वीकार करते हैं और न किसी से आमंत्रण की अपेक्षा रखते हैं। वे तो अपने भ्रमण में चातुर्मास का काल निकट आने पर जो स्थान निर्विघ्न एवं धर्म साधना के अनुकूल शान्त और एकान्त होता है, वहाँ सहज ही चातुर्मास स्थापित कर लेते हैं।

सेरोन (शान्तिनाथजी) के आसपास रहने वाले श्रावक-श्राविकाओं के भाग्य ने जोर मारा। उनके सौभाग्य से वही मुनिसंघ सेरोनजी में दर्शनार्थ पधारा। यहाँ सर्व प्रकार से आत्मसाधना की अनुकूलता देखकर चातुर्मास करने के लिए दृढ़ संकल्पित हो गया।

चातुर्मास स्थापना के मंगल अवसर पर आचार्यश्री के अपने दायित्व के निर्वाह में संघ के समस्त साधुओं को शिथिलाचार के विरुद्ध आदेश देते हुए कहा – ''हे मुनिसंघ के समस्त साधुवृन्द! वैसे तो मुझे पूर्ण विश्वास है कि सभी साधुओं ने आत्मकल्याण के लिए ही मुनिव्रत के रूप में यह असिधारा व्रत धारण किया है। इसके द्वारा हम सभी कर्मों की जंजीर काटने के लिए ही कटिबद्ध हुए हैं। अतः कोई स्वप्न में ऐसी भूल नहीं करेगा, जिससे पूरे मुनिसंघ को नीचा देखना पड़े तथा वह किसी और संकट में पड़ जाय। फिर भी यदा-कदा कोई छोटी-मोटी भूल अनजाने में हो जावे तो आगम में प्रतिदिन प्रायश्चित्त लेने का जो विधान है, उस नियम का सब पालन करेंगे।''

दिगम्बर मुनि का यथार्थ स्वरूप बताते हुए आचार्यश्री ने अपने संघ के सभी मुनिजनों से कहा ह्न ''देखो, वीतरागी दिगम्बर मुनि की अन्तर बाह्यदशा परम शान्त होती है। मुनियों के द्वारा 28 मूल गुणों का निर्दोष पालन करना और उत्तरगुणों में मुख्यतः 22 परीषहजय, 10 धर्म, 12 तप तथा 12 भावनाओं के द्वारा वैराग्य में वृद्धि के साथ देह में निर्ममत्व भावों की पुष्टि करना आप सबकी दैनिक चर्या के अभिन्न अंग हैं। साथ ही मुनियों की विषम और प्रतिकूल परिस्थितियों में सुमेरुवत अचल परिणति होती है। निंदा और प्रशंसा तथा शत्रु व मित्र के साथ समभाव एवं भूमिकानुसार होने वाले राग-द्वेष आदि भावों के प्रति उपेक्षावृत्ति होती है।

मुनियों की निर्ग्रन्थता, निस्पृहता और नग्नता आदि कठोर साधना देखकर श्रावकों में मुनियों के प्रति भक्ति उमड़ना स्वाभाविक है; परन्तु इससे मुनिदशा प्रभावित नहीं होती। कोई अश्रद्धालु/ईर्ष्यालु व्यक्ति निन्दा भी कर सकते हैं। दोनों ही परिस्थितियों में साधु समभावी ही रहते हैं।

अकम्पनाचार्य के संघस्थ मुनि श्रुतसागर की भाँति जोश में आकर कोई वैसी घटना को नहीं दुहरायेगा, जिसके कारण 700 मुनियों का संघ संकट में पड़ गया था।

तत्त्वज्ञानी साधु विकथायें करने, मंत्र-तंत्र-यंत्र एवं ज्योतिष विद्या के द्वारा प्रतिष्ठा पाने या लौकिक प्रयोजन साधने आदि के चक्कर में नहीं पड़ते। हाँ, यदा-कदा किसी को तपश्चरण के फल में मुनि विष्णुकुमार की भाँति कोई मंत्र-तंत्र या विक्रिया ऋद्धि जैसी कोई विद्या सिद्ध हो भी जाये तो वे जीवन भर उसका उपयोग नहीं करते।

मुनि विष्णुकुमारजी को विक्रिया ऋद्धि प्राप्त हो गई थी; परन्तु उन्हें स्वयं को उसका पता ही नहीं था। दूसरों ने आकर बताया कि 'आपको विक्रिया ऋद्धि प्राप्त है, आप अकम्पनाचार्य आदि 700 मुनियों के संकट को दूर करने में समर्थ हो', तब कहीं उन्होंने मुनि संघ की रक्षा में उस विक्रिया का उपयोग किया था। उसके फल में भी उन्हें पुरस्कार नहीं, दण्ड ही मिला था। पूरी दीक्षा छेदकर नई दीक्षा लेनी पड़ी थी। अतः मुनि लौकिक प्रयोजन के हेतु तो कभी भी इन प्रपंचों में नहीं पड़ते।''

ह्न ह्न ह्न

यद्यपि वरिष्ठ मुनिजन अपने कर्त्तव्यों के प्रति स्वयं ही सदैव सजग रहते हैं; परन्तु संघ में नव दीक्षित साधु भी तो होते हैं और पूर्व दीक्षितों में भी यदा-कदा शिथिलता हो सकती है। अतः आचार्य अपने दायित्व के निर्वाह हेतु और सम्पूर्ण संघ को सचेत करने के लिए समय-समय पर सामूहिक रूप से संघ को ऐसा उपदेश और आदेश देकर सावधान करते ही रहते हैं। यह बात श्रावक अच्छी तरह जानते हैं। अतः किसी के मन में ऐसा प्रश्न ही नहीं उठा कि संघ के साधुओं को ऐसा आदेश व उपदेश क्यों दिया गया? सभी साधुओं ने अपने मन में आचार्यश्री के आदेश के अनुसार ही अपनी निर्दोष- चर्या पालन करने का संकल्प किया।

आचार्यश्री द्वारा दिए गए मुनियों के कर्त्तव्यों एवं आध्यात्मिक उपदेश को उपस्थित श्रावकों एवं विद्वतवर्ग ने भी सुना। श्रावकगण तो साधुओं के कर्त्तव्यों को सुनकर अत्यधिक प्रभावित हुए ही, विद्वानजन भी मुनिसंघ के कठोर अनुशासन-प्रशासन तथा निर्दोष-चर्या देखकर गद्‌गद हो गये; क्योंकि ऐसे रत्नत्रय का निर्दोष पालन करनेवाले मुनिसंघ को श्रोताओं ने पहली बार ही देखा था।

मुनिसंघ की चारों ओर से प्रशंसा सुनकर उस सभा में एक अध्यात्म रसिक वयोवृद्ध एवं ज्ञानवृद्ध विद्वान पण्डित श्री विद्याभूषणजी शास्त्री भी पधारे थे। पण्डितजी भी इस संघ के आचार्यश्री की आध्यात्मिक रुचि और उनके निर्विवाद व्यक्तित्व से पहले से ही सुपरिचित थे। अतः उनका यहाँ आना आकस्मिक नहीं था। आचार्यश्री ने शास्त्रीजी के यहाँ आने के पहले शास्त्रीजी को याद भी किया था। अतः आचार्यश्री मुस्करा कर बोले ह्न ''पण्डितजी आपकी उम्र लम्बी है, मैंने याद किया और आप आ गये।''

पण्डितजी ने मुस्कुरा कर कहा ह्न ''आपका आध्यात्मिक प्रेम मुझे सहज ही खींच लाया। यद्यपि मेरा स्वास्थ्य इस लायक नहीं है, फिर भी न जाने कौनसी शक्ति मुझे यहाँ ले आई।

आचार्य श्री गुण-ग्राही थे, अतः विद्वानों को यथायोग्य आदर देते थे। वे पण्डितजी के गहन चिन्तन, तत्त्वज्ञान की गहरी पकड़, सरल-सुबोध शैली में लेखन आदि से तथा समाज में पण्डितजी को प्राप्त प्रतिष्ठा से परिचित और प्रभावित थे। अतः आचार्यश्री ने पण्डितजी को अग्रिम पंक्ति में बैठनेको कहा।

ह्न ह्न ह्न

170 तीर्थंकर मण्डल विधान

नागपुर (महा.) : यहाँ दिनांक 20 से 22 नवम्बर तक श्री कुन्दकुन्द दि.जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में पण्डित राकेशजी शास्त्री मङ्गलायतन के परिवार द्वारा श्री 170 तीर्थङ्कर मंडल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

विधि–विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री के सानिध्य में पण्डित अरूणजी मोदी, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, पण्डित नंदकिशोरजी शास्त्री काटोल, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, स्थानीय पं. विपिनजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित जितेन्द्रजी राठी, पण्डित रविन्द्रजी शास्त्री, पण्डित धवल गांधी, पण्डित पंकजजी शास्त्री दहातोंडे के सहयोग से संपन्न हुआ।

विधान के समापन के अवसर पर पण्डित राकेशजी शास्त्री एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री ने विद्यानिकेतन की कार्यविधि को नागपुर समाज का गौरव बताते हुये इसे तत्त्वज्ञान के प्रचार का अनूठा प्रयास बताया।

इस अवसर पर प्रात: 7 से 10 बजे तक पूजन–विधान का कार्यक्रम तथा दोपहर को आगन्तुक विद्वानों के साथ तत्त्वचर्चा हुई। रात्रि में 8 से 8.30 बजे तक महावीर विद्यानिकेतन के छात्रों द्वारा जिनेन्द्र भक्ति के उपरांत पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली के मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन कुमारी प्रज्ञा जैन देवलाली तथा कुमारी दीक्षा जैन अलीगढ द्वारा विद्यानिकेतन के छात्रों के सहयोग से संपन्न हुआ।

– मनीष शास्त्री / अखिलेश जैन

ब्र. कल्पना बेन द्वारा धर्म प्रभावना

औरंगाबाद (महा.) : यहाँ विदुषी ब्र. कल्पनाबेन द्वारा दिनांक 16 अक्टूबर से 22 नवम्बर तक विभिन्न विषयों पर प्रवचन हुये। इसके अन्तर्गत प्रात: समयसार की पहली गाथा की टीका के आधार से **अपने में सिद्धत्व की स्थापना** विषय पर, दोपहर में परमभावप्रकाशक नयचक्र आदि अनेक ग्रन्थों के आधार से **नयज्ञान की आवश्यकता एवं प्रयोगविधि** तथा रात्रि में **जीवन में सुखी होने का उपाय** विषय पर प्रवचन हुये।

संपूर्ण कार्यक्रम में स्वानुभव स्वाध्याय मंडल के सदस्यगण श्री रत्नाकरजी गाडेकर, श्री दामोदरजी गाडेकर, श्री नेमीचंदजी अर्पल, श्री दोंडल एवं महाविद्यालय के स्नातक श्री संजयकुमारजी राऊत आदि लोगों ने धर्मलाभ लिया। महिला मंडल की अनेक महिलाओं ने भी उत्साहपूर्वक कार्यक्रम संपन्न कराये।

– चिंतामण भूस

विधान एवं प्रवचन का आयोजन

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 28 नवम्बर को अ.भा. जैन युवा फैडरेशन द्वारा तीर्थक्षेत्र कुरानाजी पर पूजन–विधान एवं प्रवचन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. चन्द्रसेनजी जैन द्वारा प्रवचन का लाभ मिला। पूजन–विधान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन ब्र. समता झांझरी उज्जैन एवं पण्डित अनिल धवल भोपाल ने संपन्न कराये। कार्यक्रम में पण्डित कपूरचंदजी कौशल, पंचायत कमेटी के अध्यक्ष श्री अशोक पंचरत्न, मुमुक्षु मण्डल के अध्यक्ष श्री अशोक जैन सुभाष ट्रांसपोर्ट तथा मंत्री श्री हुकुमचंदजी जैन आदि के अतिरिक्त लगभग 600 लोगों की उपस्थिति रही। **– अनिल जैन (इन्जी.)**

शोक समाचार

1. **मुम्बई निवासी श्रीमती कंचनदेवी पाटनी धर्मपत्नी स्व. श्री सौभागमलजी पाटनी** का दिनांक 6 दिसम्बर को विशुद्धपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी महिला थीं; आपने जयपुर में कई वर्षों तक रहकर धर्मलाभ लिया था। अनेकों बार आप जयपुर शिविर में पधारकर प्रवचनों का लाभ लेती थीं।

2. **सरदारशहर–चूरू (राज.) निवासी श्रीमती किस्तूरीदेवी पुगलिया** का 78 वर्ष की आयु में दि. 25 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थीं; जयपुर शिविर में लगभग 20 वर्षों से प्रतिवर्ष पधारकर लाभ लेती थीं। आपकी स्मृति में वीतराग–विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक में कुल 1100/– प्राप्त हुये हैं।

3. **बड़ौत–बागपत (उ.प्र.) निवासी श्री प्रेमचंदजी जैन** का दिनांक 30 अक्टूबर को शांतपरिणामों एवं समाधिमरणपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में 1100/– साहित्य की कीमत कम करने में, 500/– जैनपथप्रदर्शक एवं 500/– वीतराग–विज्ञान हेतु प्राप्त हुये हैं।

4. **फिरोजाबाद (उ.प्र.) निवासी श्री वीरेन्द्रवीर जैन** का दिनांक 8 दिसम्बर को देहावसान हो गया। आप बहुत स्वाध्यायी थे; जयपुर में लगनेवाले प्रत्येक शिविर में आप पधारते थे। दसलक्षण पर्व में प्रवचनार्थ भी जाया करते थे। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अनंतवीर शास्त्री एवं पण्डित अरहंतवीर शास्त्री के दादाजी थे।

आप अ.भा. जैन युवा फैडरेशन पश्चिमी उत्तरप्रदेश के अनेक वर्षों तक अध्यक्ष रहे एवं वर्तमान में उत्तरप्रदेश के संरक्षक थे।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हों ह्न यही भावना है।

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न

देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ दिनांक 25 से 27 नवम्बर तक श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट द्वारा श्री 1008 भगवान शांतिनाथ कुंदकुंद कहान दि.जैन मंदिर में नवनिर्मित वेदी पर भगवान पार्श्वनाथ जिनबिम्ब तथा आचार्य कुंदकुंददेव की प्रतिमा श्री रमेशभाई पोपटलाल वोरा परिवार हस्ते अरुणाबेन तथा श्रीमती शांताबेन बालचंद भाई शाह परिवार हस्ते जिग्नेशभाई शाह की ओर से विराजमान की गई।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल** के णमोकार महामंत्र विषय पर मोक्षपाहुड़ तथा समयसार की गाथाओं के आधार से मार्मिक व्याख्यान हुये। आपके अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, ब्र. हेमचंदजी हेम देवलाली, पण्डित राजेन्द्रजी जबलपुर, पण्डित अनिलजी भिण्ड आदि विद्वानों के भी प्रवचनों का लाभ मिला। प्रतिदिन गुरुदेवश्री के सी.डी.प्रवचनों का लाभ भी मिला।

विधि–विधान के संपूर्ण कार्य ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में संपन्न हुये।

– भरत वी. शाह

जिनमंदिर के पुजारियों ! नि:शुल्क इलाज का लाभ लो ! बच्चों को मुफ्त पढाओ !

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा प्रस्तुत

स्वास्थ्य बीमा योजना

1. इस योजना के तहत हमारे ट्रस्ट से मुमुक्षु समाज द्वारा संचालित जिनमंदिर के पुजारी भाइयों एवं उनके परिवार का 1 लाख रुपये का मेडिकल बीमा और 1 लाख रुपये का दुर्घटना बीमा कराया जा रहा है, जिसकी प्रीमियम राशि ट्रस्ट द्वारा बीमा कम्पनी को दी जाएगी।

2. किसी भी प्रकार की बीमारी होने पर कम से कम 24 घंटे के लिये अस्पताल में भर्ती होना पड़ेगा। हम आपको कम्पनी का टोल फ्री नम्बर देंगे। अस्पताल में भर्ती होने पर इस नम्बर पर भर्ती होने की तुरन्त सूचना दें।

3. अस्पताल एवं दवाइयों के बिल का भुगतान बीमा कम्पनी द्वारा अस्पताल या आपको किया जायेगा।

4. किसी बीमारी या दुर्घटनावश मृत्यु होने पर आपके द्वारा नामांकित व्यक्ति को एक लाख रुपया बीमा कम्पनी द्वारा दिया जायेगा।

5. इसके आवेदन फार्म भरकर भेजने की अंतिम तिथि 31 जनवरी है।

नि:शुल्क शिक्षा योजना

1. इस योजना के अंतर्गत मुमुक्षु समाज द्वारा संचालित जिनमंदिर के पुजारियों की दो संतानों को स्कूल फीस हमारे ट्रस्ट द्वारा दी जायेगी।

2. इसके लिये पुजारी भाईयों को एक आवेदन फार्म भरकर हमारे कार्यालय में रजिस्ट्रेशन कराना होगा।

3. हमारे ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष मार्च से जून माह तक फीस राशि का भुगतान किया जायेगा।

4. एक संतान के लिये अधिकतम दस हजार रुपये की राशि का भुगतान होगा।

उक्त दोनों योजनाओं में शामिल होने के लिये हमारे कार्यालय से फार्म प्राप्त कर लें।

संपर्क सूत्र

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

उपकार्यालय – बंगला नं. 50, कहान नगर, बेलतगांव रास्ता, लाम रोड़,
पो. देवलाली, जिला– नासिक (महा.) 422401 फोन. 0253 2491531
संयोजक – विराग शास्त्री मो. 9373294684

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 42

दसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

जो व्यक्ति विचित्र प्रकार के वस्त्रादि धारण कर साधुता का सम्मान लेना चाहते हैं; वे तो द्रव्यलिंगी भी नहीं; न मालूम कौन हैं, समझ में नहीं आता ह्न उन्हें क्या कहा जाय ?

कुछ लोग कहते हैं कि दिगम्बर भी तो एक वेश है। उनसे मैं कहना चाहता हूँ कि दिगम्बरत्व कोई वेश नहीं है, एक प्रकार से सब वेशों के परित्याग का नाम ही दिगम्बरत्व है; पर क्या किया जा सकता है, वेशों की भाषा के अभ्यासियों ने सब वेशों के त्याग को दिगम्बर वेश नाम दे दिया है।

उक्त संदर्भ में ''वीतरागी व्यक्तित्व : भगवान महावीर'' में लिखा हैह्न

''साधु बनने में भेष पलटना पड़ता है, साधु होने में स्वयं ही पलट जाता है। स्वयं के बदल जाने पर वेश भी सहज ही बदल जाता है। वेश बदल क्या जाता है, सहज वेश हो जाता है, यथाजात वेश हो जाता है; जैसा पैदा हुआ था, वही रह जाता है, बाकी सब छूट जाता है।

वस्तुत: साधु की कोई ड्रेस नहीं है, सब ड्रेसों का त्याग ही साधु का वेश है। ड्रेस बदलने से साधुता नहीं आती, साधुता आने पर ड्रेस छूट जाती है। यथाजातरूप (नग्न) ही सहज वेश है और सब वेश तो श्रमसाध्य हैं, धारण करनेरूप हैं। वे साधु के वेश नहीं हो सकते; क्योंकि उनमें गांठ है, उनमें गांठ बांधना अनिवार्य है। साधुता बंधन नहीं है, उसमें सर्व बन्धनों की अस्वीकृति है।

साधु का कोई वेश नहीं होता, नग्नता कोई वेश नहीं। वेश साज-संभार है, साधु को सजने-संवरने की फुर्सत ही कहाँ है ? उसका सजने का भाव ही चला गया है। सजने में 'मैं दूसरों को कैसा लगता हूँ' का भाव प्रमुख रहता है। साधु को दूसरों से प्रयोजन ही नहीं है, वह जैसा है, वैसा ही है। वह अपने में ऐसा मग्न है कि दूसरों के बारे में सोचने का काम ही नहीं। दूसरे उसके बारे में क्या सोचते हैं, इसकी उसे परवाह ही नहीं। सर्व वेश शृंगार के सूचक हैं, साधु को शृंगार की आवश्यकता ही नहीं। अत: उसका कोई वेश नहीं होता।

दिगम्बर कोई वेश नहीं है, सम्प्रदाय नहीं है; वस्तु का स्वरूप है; पर हम वेशों को देखने के इतने आदी हो गये हैं कि वेश के बिना सोच ही नहीं सकते। हमारी भाषा वेशों की भाषा हो गई है। अत: हमारे लिए दिगम्बर भी वेष हो गया है। हो क्या गया ह्न कहा जाने लगा है।

सब वेशों में कुछ उतारना पड़ता है और कुछ पहिनना होता है; पर इसमें छोड़ना ही छोड़ना है, ओढना कुछ भी नहीं। छोड़ना भी क्या, उघड़ना है, छूटना है।[१]''

दिगम्बर मान्यतानुसार यद्यपि यह परम सत्य है कि आदिनाथ से लेकर महावीर तक सभी तीर्थंकरों ने नग्न दिगम्बर दशा में ही केवलज्ञान की प्राप्ति की थी तथा उस समय उनकी परम्परा के सभी सन्त नग्न ही रहते थे; तथापि उन्हें दिगम्बर शब्द से अभिहित नहीं किया जाता था; क्योंकि ये **दिगम्बर-श्वेताम्बर नाम तो भद्रबाहु श्रुतकेवली के समय से आरंभ हुए हैं।**

जब श्वेत कपड़े पहननेवालों को श्वेताम्बर कहा जाने लगा तो उनसे विरुद्ध नग्न सन्तों को दिगम्बर शब्द से अभिहित किया जानेलगा।

१. वीतरागी व्यक्तित्व : भगवान महावीर, पृष्ठ ह्न १४-१५

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2010

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 29 जनवरी 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (बा.प्रथम खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1(प्रवेशिका प्रथम खण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड (प्रथम वर्ष)
शनिवार 30 जनवरी 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (बा.द्वितीय खण्ड) मौखिक 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2(प्रवेशिका द्वितीयखण्ड) 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड (द्वितीय वर्ष) 10. विशारद द्वितीय खण्ड (प्रथम वर्ष)
रविवार 31 जनवरी 2010	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (बा.तृतीय खण्ड) मौखिक 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 (प्रवेशिका तृतीय खण्ड) 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड (द्वितीय वर्ष)

नोट – (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

ह्न ओमप्रकाश आचार्य (प्रबंधक ह्न परीक्षा बोर्ड)

हीरक जयन्ती के अवसर पर ह्न

विदिशा सकल जैन समाज द्वारा डॉ. भारिल्ल का अभिनन्दन

विदिशा (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 20 नवम्बर को दि.जैन बड़ा मंदिर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का प्रवचन एवं तत्पश्चात् हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विदिशा के जैन समाज के अतिरिक्त विभिन्न संस्थाओं ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

इस अवसर पर श्री राजेशजी जैन (विदिशा व्यापार महासंघ), श्री रवि पटेल (विदिशा मुमुक्षु मण्डल), श्री मलूकचंदजी जैन (विदिशा परवार ट्रस्ट), श्री आर.के. जैन (विदिशा परवार जैन समाज), श्री प्रकाशजी चौधरी (अध्यक्ष–सकल दि.जैन समाज विदिशा), श्री प्रकाशजी जैन, श्री राजकुमारजी जैन एवं पण्डित शिखरचंदजी जैन (दि.जैन बड़ा मंदिर ट्रस्ट), श्री दीपकजी सेठ (स्टेशन जैन मंदिर), श्री राघवजी भाई (विधायक एवं वित्तमंत्री, विदिशा), डॉ. सरल जैन, श्री अविनाशजी जैन एवं श्री सुखलालजी जैन (दि.जैन तारण समाज), डॉ. पदम जैन एवं श्री अशोकजी मानोरिया (गोलालारी समाज), डॉ. पाटनी (खण्डेलवाल जैन समाज) एवं श्री अनिलकुमारजी सिंघई (चन्द्रप्रभ ट्रस्ट) द्वारा डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया गया। इनके अतिरिक्त विदिशा के सभी मंदिरों के ट्रस्टी एवं अध्यक्ष, महिला मुमुक्षु मण्डल एवं महिला मण्डल विदिशा ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया।

ब्र. अमित भैया ने अपने वक्तव्य में डॉ. भारिल्ल के जीवन पर प्रकाश डाला तथा पण्डित शिखरचंदजी ने उनके साहित्य के लेखन पर अपने विचार व्यक्त किये। इनके अतिरिक्त भी अनेक लोगों ने अपने विचार व्यक्त किये। तत्पश्चात् डॉ. भारिल्ल के उद्बोधन का लाभ उपस्थित जनसमुदाय को मिला।

कार्यक्रम में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक डॉ. मुकेशजी शास्त्री, पण्डित विनोदजी शास्त्री, पण्डित राजेशजी शास्त्री, पण्डित चिन्मयजी शास्त्री, पण्डित अविरलजी शास्त्री, पण्डित नितिनजी शास्त्री एवं पण्डित आशीषजी शास्त्री ने भी अपने गुरु का सम्मान किया। विदिशा जैन समाज में डॉ. भारिल्ल का सम्मान करने का उत्साह इतना अधिक था कि रात्रि में रेल्वे स्टेशन पर ही लगभग 100 –150 लोगों ने हार–मालायें पहनाकर भव्य स्वागत किया।

रात्रि 8 से 11 बजे तक चले इस कार्यक्रम में लगभग एक हजार लोगों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन डॉ. विद्यानंदजी जैन ने किया।

(आगामी कार्यक्रम...)

अध्यात्म संगोष्ठी

श्री दि.जैन महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट, भिण्ड द्वारा दिनांक 2 से 7 जनवरी, 2010 तक आदरणीय ब्र. रवीन्द्रजी के सानिध्य में एक आध्यात्मिक संगोष्ठी आयोजित की जा रही है, जिसमें पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित प्रद्युम्नकुमारजी मुजफ्फरनगर आदि के प्रवचनों का लाभ मिलेगा।

आप सभी को अधिक से अधिक संख्या में पधारने हेतु भाव भीना आमंत्रण है, पधारकर धर्मलाभ लेवें।

सम्पर्क–सूत्र ह्न वीरचन्द सर्राफ (अध्यक्ष), महेन्द्रकुमार शास्त्री (मंत्री)–09329898503, कौशलकिशोर जैन (उपमंत्री) –09826235173

अष्टान्हिका महापर्व सानन्द सम्पन्न

1. **ग्वालियर (म.प्र.) :** यहाँ कार्तिक अष्टाह्निका के अवसर पर दिनांक 26 अक्टूबर से 2 नवम्बर तक जयपुर से पधारे पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में 3 से 4 बजे तक सिद्धचक्र–विधान का अयोजन किया गया। रात्रि का प्रथम प्रवचन ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री तथा द्वितीय प्रवचन पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा का हुआ।

रात्रि में अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये। विधि–विधान के कार्य ब्र. अभिनंदनकुमारजी शास्त्री के निर्देशन में सम्पन्न हुये। **– अजीत अचल**

2. **भावनगर (गुज.) :** यहाँ मुमुक्षु मण्डल द्वारा कार्तिक माह का अष्टाह्निका पर्व अनेक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया। इस अवसर पर प्रात: पंचमेरु–नंदीश्वर विधान का आयोजन हुआ। प्रात: गुरुदेवश्री के प्रवचन के पूर्व पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर के समयसार कलश टीका पर तथा रात्रि में पण्डित बनारसीदासजी द्वारा विरचित परमार्थ वचनिका पर व्याख्यान हुये।

सभी कार्यक्रमों में श्री हीरालालजी काला, श्री अनिलभाई, श्रीमती अनुराधा अनिलभाई आदि का विशेष सहयोग रहा।

डॉ. भारिल्ल द्वारा विशेष व्याख्यान

विदिशा (म.प्र.) : बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल द्वारा सेठ शिताबराय लक्ष्मीचंद जैन कॉलेज सभागृह विदिशा (म.प्र.) में दिनांक 21 नवम्बर को आयोजित विश्वविद्यालयीन व्याख्यानमाला की दशम श्रृंखला में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंद भारिल्ल का व्याख्यान **जैन दर्शन के परिप्रेक्ष्य में अनेकांत और स्याद्वाद** विषय पर हुआ। अतिथियों के माल्यार्पण के पश्चात् सेठ राजेन्द्रकुमारजी जैन ने स्वागत उद्बोधन में कहा कि 'यह सहज संयोग है कि डॉ. भारिल्ल 75 वर्ष के हो रहे हैं और हमारी संस्था को भी 75 वर्ष हो गये हैं। यह दोनों का ही हीरक जयन्ती वर्ष है।'

सभा की अध्यक्षता प्रो. डॉ. रविन्द्रजी जैन (कुलपति बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय) ने की। मुख्य अतिथि के रूप में मा. राघवजी भाई (वित्तमंत्री म.प्र.शासन) मौजूद थे। अन्त में आभार प्रदर्शन डॉ. आर.के.जैन (प्राचार्य–जैन महाविद्यालय विदिशा) ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

इस अवसर पर पण्डित सौरभजी शास्त्री ने स्क्रीन पर डॉ. भारिल्ल के जीवन पर आधारित दृश्य दिखाए। समारोह में श्री हंसमुख गांधी(राष्ट्रीय अध्यक्ष–दि.जैन हुम्मड समाज), श्री बाहुबली पाण्डया, श्री ललित बडजात्या, पं. जयसेन जैन(सम्पादक–सन्मति वाणी), श्री संतोष मामा(सम्पादक–जैन प्रतीक), श्री अजित मूथा(सम्पादक–जैनं जयति शासनम्), श्री जयकुमार जैन(सम्पादक–जैन हलचल), श्री हुकमचन्द शाह बजाज(राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष–दि.जैन महासमिति), श्री मुकेश जैन, श्री अशोकजी जैन(एम.डी.–अरहंत केपिटल), श्री आर.के.जैन(राष्ट्रीय अध्यक्ष–जैन इंजीनियरिंग सोसायटी), श्री प्रमोद जैन(एम.डी.–बायोनियर ऑफ इंजीनियरिंग इंस्टीट्यूट), पं. पूनमचन्द छाबड़ा तथा श्री अखिल बंसल(राष्ट्रीय महामंत्री–अ.भा.जैन पत्र सम्पादक संघ) आदि भी उपस्थित थे।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्लजी पर विशिष्ट सामग्री के साथ प्रकाशित समाचार पत्र 'श्री जैन हलचल' के विशेषांक का विमोचन डॉ. भारिल्लजी के कर कमलों द्वारा किया गया। वीर निकलंक, जिनेन्द्र की आवाज तथा जैनम् जयति शासनम आदि अखबारों ने भी विशेष सामग्री प्रकाशित की, जिनकी प्रतियाँ डॉ. भारिल्लजी को भेंट की गई। कार्यक्रम का संचालन श्री प्रदीप चौधरी तथा आभार प्रदर्शन पण्डित गौरव शास्त्री ने किया।

17 दिसम्बर 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग : सेमीनार सम्पन्न

मुम्बई : यहाँ दिनांक 28 नवम्बर 09 को ओसवाल हालारी महाजन वाड़ी (दादर) में दिव्यध्वनि प्रचार-प्रसार ट्रस्ट द्वारा **आर्ट ऑफ हैप्पी लिविंग : द्वितीय सेमीनार** आयोजित किया गया। डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के परामर्श एवं डॉ. शुद्धात्मप्रभाजी टडैया के निर्देशन में आयोजित यह सेमीनार जैन जीवनदर्शन की वैज्ञानिकता व उपयोगिता को युवक-युवतियों को समझाने का एक सुन्दर प्रयास रहा। आयोजन का मुख्य उद्देश्य युवाओं को जैनतत्त्व व दर्शन के माध्यम से तनाव रहित सुखी व संयमित जीवन जीना सिखाया जाना था।

अतिथियों के सम्मान के बाद प्रारंभ हुये इस कार्यक्रम में युवाओं को चिंतामुक्त रहने के उपाय के रूप में जैनधर्म के गूढ़ रहस्यों को काफी सरल एवं युवा वर्ग की भाषा में समझाया गया।

जीवन में प्रतिसमय अनुभव में आने वाले तनाव का प्रबंधन (मैनजमेन्ट) किस प्रकार किया जाय ह्न इस विषय पर बोलते हुये संचालिका **विदुषी स्वानुभूति जैन** ने कहा कि इच्छायें व दूसरों के प्रति हमारी अपेक्षायें तनाव का मुख्य कारण होती हैं, साथ ही परिस्थितियों को देखने का हमारा नजरिया तनावपूर्ण या तनाव रहित जीवन का कारण होता है।

प्रखर ओजस्वी वक्ता **श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल** ने अपनी विशिष्ट शैली द्वारा बताया कि जीवन में जो भी घटित होता है, उसे समस्या नहीं वरन् वास्तविकता के रूप में स्वीकार कर उसका समाधान खोजकर ही हम सफल व तनाव रहित जीवन जी सकते हैं एवं अनावश्यक पाप बंध से बच सकते हैं। जीवन के मुख्य चार शत्रु क्रोध, मान, माया, लोभ जैसी कषायों से बचकर ही हम सुखी हो सकते हैं।

इस अवसर पर अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान **डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल** का हीरक जयंती के अवसर पर देश के विविध क्षेत्रों में चल रहे सम्मान समारोह की शृंखला में यहाँ खचाखच भरे सभागृह में **श्री लक्ष्मीचंद भगवानजीभाई शाह परिवार लन्दन** द्वारा डॉ. भारिल्ल को शॉल ओढाकर, श्रीफल, अंगवस्त्र, कुर्ता बटन आदि भेंटकर सम्मानित किया गया। **श्रीमती गुणमाला भारिल्ल** का सम्मान श्रीमती सुशीलाबेन लंदन ने किया।

डॉ. भारिल्ल ने सभा को संबोधित करते हुये कहा कि सप्त व्यसनों के त्याग एवं अष्टमूल गुणों के धारण से ही हम जैन कहलाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने सुख-दुःख का उत्तरदायी स्वयं है। जीवन को धर्म के अनुसार ढालकर ही हम तनावमुक्त हो सकते हैं। आत्मज्ञान ही सत् है एवं कल्याणकारी है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता **श्री कांतिभाई मोटानी मुम्बई** ने की। मुख्य अतिथि के रूप में **श्री राजूभाई घाटकोपर** मंचासीन थे। मङ्गलाचरण श्रीमती ज्योति गाला ने किया। लगभग 4 घण्टे चले इस कार्यक्रम में 600 लोगों ने भाग लिया और मुक्त कंठ से प्रशंसा की। **- विद्या उत्तम शाह**

'मैं कौन हूँ' नये रूप में

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल द्वारा लिखित 'मैं कौन हूँ?' नामक पुस्तक में दिये गये निबन्धों को और अधिक सरल-सुबोध बनाने के लिये उसमें आवश्यक संशोधन एवं परिवर्धन करके आकर्षक रूप में प्रकाशित किया गया है। पुस्तक में 18 नये पेज बढ कर अब कुल 90 पृष्ठ हो गये हैं। इस तरह यह पुरानी पुस्तक की तुलना में और भी अधिक उपयोगी बन गई है।

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

1. डोंबीवली-पूर्व (मुम्बई) : यहाँ दिनांक 18 एवं 19 नवम्बर को ग्रंथाधिराज **समयसार** पर दिन में दो बार प्रवचन हुये।

2. इचलकरंजी-कोल्हापुर (महा.) : यहाँ स्थित बोर्डिंग मंदिर में 20 से 22 नवम्बर तक **कर्म के दसकरण** विषय पर 3 प्रवचन हुये।

3. बेलगांव (कर्नाटक) : यहाँ स्थित महावीर भवन में 30 नवम्बर व 1 दिसम्बर को अनेक कार्यक्रम संपन्न हुये, जिनमें मुख्य रूप से **प्रवचनसार (कन्नड़)** का विमोचन हुआ। ब्र. यशपालजी जैन के प्रवचन प्रथम दिन **प्रवचनसार का परिचय** विषय पर तथा दूसरे दिन **प्रवचनसार की 5वीं गाथा की टीका** पर हुये, साथ ही विदुषी धवलश्री एवं ए. आनंदकुमार के समयसार पर प्रवचन हुये। सैंकड़ों लोगों ने प्रवचनसार (कन्नड़) क्रय किया। कार्यक्रम में बैंगलोर, मैसूर, सांगली, कोल्हापुर आदि स्थानों से साधर्मीजन पधारे।

4. मलाड-पूर्व (मुम्बई) : यहाँ 3 से 5 दिसम्बर को उत्कर्ष मुमुक्षु मण्डल में **कर्म के स्वरूप** विषय पर प्रवचन हुये, जिसे लोगों ने अत्यंत रूचिपूर्वक सुना।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

22 से 28 दिसम्बर	दक्षिण भारत	फैडरेशन द्वारा यात्रा
29 व 30 दिसम्बर	बैंगलोर	प्रवचन
31 से 4 जनवरी	चैन्नई	व्याख्यानमाला एवं हीरक जयंती
9 से 10 जनवरी	चैतन्यधाम (अहमदाबाद)	महासमिति सम्मेलन
16 से 17 जनवरी	इन्दौर	विधान
15 से 17 फरवरी	चन्देरी (म.प्र.)	मंदिर शिलान्यास एवं हीरक जयंती
17 से 18 फरवरी	टीकमगढ	प्रवचन एवं हीरक जयंती
19 से 21 फरवरी	ललितपुर	प्रवचन एवं हीरक जयंती
08 से 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 से 14 मार्च	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
28 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
11 मई से 3 जून	देवलाली	गुरुदेव जयंती, प्रशिक्षण शिविर व हीरक जयन्ती समापन समारोह
4 जून से 25 जुलाई	विदेश	धर्म प्रचारार्थ
1 से 10 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिक्षण शिविर

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2009

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127